दिल्ली ऊंचा सुनती है - व्यवस्थाओं का सत्य

प्रो. डॉ किशोर माणिकराव पवार
kishorpawar2345@gmail.com

सारांश –

'दिल्ली ऊंचा सुनती है' यह कुसुम कुमार का लिखा नाटक है | इसकी रचना दो अंकों में हुई है | दोनों अंकों में प्रत्येकी पांच - पांच दृश्य हैं | **" कुसुम कुमार का 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' यथार्थवादी मंचीय नाटक है | संरचनात्मक दृष्टि से यह नाटक द्विअंकी है | पहले अंक में पांच दृश्य और दूसरे अंक में पांच दृश्य हैं | इसमें घर का सामान्य दृश्य, पेंशन ऑफिस का दृश्य, अस्पताल का दृश्य, जैसे सामान्य दृश्य टेबल, कुर्सी और कुछ फाइलों से चलाने का निर्देश नाटककार ने दिया है | कम साधन में भी मंच सज्जा व्यवस्थित रूप से हो सकती है | नाटककार ने दृश्य के प्रारंभ में दृश्य परिवर्तन के समय रंग संकेत दिए हैं | नाटककार की ध्वनि योजना प्रसंगानुकूल है | जिसका उपयोग नाटक में हर जगह हुआ है | नाटक का कथानक दर्शक को बिना किसी व्यवधान के सीधे मानसिक एवं वैचारिक स्तर पर प्रभावित करने वाला है | कथ्य के स्तर पर नाटक व्यंग्य के माध्यम से दर्शक की मानसिक संवेदना और अनुभूति को जगाने में सफल रहा है |"**1 एक साधारण नोकरी करने वाला कर्मचारी सेवानिवृति के उपरांत साधारण जीवन यापन करने का इच्छुक है | परंतु हमारी विभिन्न व्यवस्थाएं उसे जीवन यापन करने में बाधाएं उत्पन्न करती हैं | विशेषत: कार्यालयीन व्यवस्था में रिश्वत के रोग से गतिहीनता आयी है | कार्यालयीन अव्यवस्था, गतिहीनता, गैर - जिम्मेदारी, असहकारिता इत्यादि से वह अक्षम बनी है | परिणामस्वरूप जनसाधारण अपने एक अपेक्षित अधिकार की पेंशन प्राप्त नहीं कर पाता | अत: अर्थाभाव, मानसिक यंत्रणा तथा उम्मीद की प्रताड़ना से सेवानिवृत्त कर्मचारी देखते - देखते मरणप्राय होकर मरणप्राप्त होता है | विडंबना यह कि पेंशन की निश्चिति मरणोपरांत होती है, परंतु उसकी बहाली नहीं होती | उसके परिजन भी उसी त्रासदी व अभाव को भोगने - झेलने को विवश हो जाते हैं |

शब्द संकेत – अ) **दिल्ली** यह शब्द संपन्नता का, कार्यालयीन व्यवस्था का प्रतीक है | कार्यालय व्यवस्था से तात्पर्य है - कार्यालय, उच्चतर कार्यालय तथा मंत्रालय आदि | आ) ऊंचा सुनना यह व्यवस्था के बहरे बन जाने की स्थिति का परिचायक है, जो जनसाधारण को विपन्न बनाकर स्वयं संपन्न होती रहती है |

इ) **प्रश्नावली** यह शब्द नाटक में आया है, इसका संबंध रामायण की रामशलाका प्रश्नावली से है | यह एक कोष्ठक होता है, जिसके किसी आंकड़े पर ऊंगली रख कर मन के प्रश्न का उत्तर देखने की सुविधा होती है | ऐसे उत्तर-पूर्व से दिए होते हैं; जो सुविधा मात्र होते हैं | जिससे प्रश्न व समस्याग्रसित व्यक्ति मन का आभासी उत्तर पढता है; पाता नहीं |

संशोधन पद्धति - प्रस्तुत विषय पर शोध -आलेख हेतु हमने विश्लेषण, आलोचना पद्धति का आधार लिया है | जिसमें मूल नाट्यकृति, संदर्भ पुस्तकें व ई सन्दर्भों का उपयोग किया है |

प्रस्तावना –

हमारे सामाजिक जीवन की कई व्यवस्थाएं हमारी सुविधा व सुचारू जीवन के लिए बनाई गई हैं | जैसे - परिवार व्यवस्था, सुरक्षा के लिए पुलिस तथा कानून व्यवस्था, न्याय के लिए विधि - अदालत की व्यवस्था, आरोग्य व्यवस्था, विवाह व्यवस्था, विभिन्न कार्यालयों के लिए कार्य व्यवस्था; जिसे कार्यपालिका कहा जाता है | सभी प्रकार की समस्याओं के निराकरण हेतु इनका निर्माण किया हुआ है | समाज की अधिकतर समस्याएं तो केवल जनसाधारण व निम्न वर्ग की होती हैं, यह कहना साहस का होगा | परंतु लगभग यही सामाजिक सत्य है | वास्तव में समस्याएं जनसाधारण व निम्न

मध्यवर्ग की ही होती हैं | समस्याओं के समाधान तो उससे अगले वर्गों के पास उपलब्ध होते हैं। अतः उनके पास समस्याएं नहीं; समाधान सहज, सुलभ होते हैं | **'दिल्ली ऊंचा सुनती है'** यह नाटक भी इसी साधारण जन की, निम्नवर्ग की समस्याओं को चित्रित करता है | माधोसिंह सेवानिवृत्त होने के उपरांत दिल्ली में अपना घर चलाने की स्थिति से परिचित हैं | उनका दिल्ली में रहना सेवारत स्थिति में विवशता है | परंतु दिल्ली के आसपास निवास के लिए एक साधारण गांव में आना उनकी आर्थिक विवशता है | पुत्री नीति के विवाह उपरांत उसके पति द्वारा उसे परित्यक्ता स्थिति की बहाली से उसका मानसिक असंतुलन व बीमार होना इस परिवार की चिंता है | "माधोसिंह की बेटी नीति परित्यक्ता है | वह सुन्दर है किन्तु अधिकांश समय अस्वस्थ, उदास रहती है | उसकी अस्वस्थता मनोवैज्ञानिक है; मानसिक है |"2

माधोसिंह अपनी अप्राप्त पेंशन की प्राप्ति हेतु पत्राचार करते हैं, प्रत्यक्ष कार्यालय जाकर मिलते हैं | परंतु पेंशन कार्यालय में अभिलेख के अनुसार वे मृत हैं | अत: उन्हें पेंशन बहाली नहीं हुई है | इस गलत अभिलेख में माधोसिंह की क्या गलती है ? जिसकी गलती है वह सुधार करता नहीं है | निश्चित ही जिसे आवश्यकता है वह गलती सुधारेगा | अतः माधोसिंह के जीवित होने का प्रमाण डॉक्टर से प्रमाण पत्र लाकर करें | उनके परिचित डॉक्टर नेकी तो दिखाते हैं; पर सहायता नहीं करते | एक जीवित को जीवित होने का प्रमाण पत्र दिया जाना; क्या संकट है ?

माधोसिंह सरकारी अस्पताल के चक्कर लगाते हैं | वहां भी वर्तमान समाज की आपाधापी, वसीले बाजी के परिणाम स्वरूप अपयश हाथ लगता है | नए घर मालिक मगनलाल संवेदित होकर माधोसिंह की सहायता के लिए अपना पहलवानी चोला धारण करते हैं | परंतु उनकी साख की भी कोई पूछ नहीं होती | अतः मंत्री से भी काम नहीं बन पाता, दोनों उदास, निराश लौटते हैं |

स्थिति बद से बदतर होते पुत्री नीति आत्मघात कर लेती है | थके, हारे माधोसिंह बिना पेंशन के ही सिधार जाते हैं | पेंशन ऑर्डर की राह देखते-देखते ना लौटने की राह चल देते हैं |

संभवतः पेंशन निश्चित हुई है, परंतु पेंशन धारक अब मृत होने से उसकी बहाली नहीं होती | पेंशन वाली डाक वापस जाती है | विडम्बना व भाव की स्थिति में मृतक की पत्नी कमला प्रतीक्षित व बाकी है | इस प्रकार व्यवस्था की अव्यवस्था जनसाधारण के जीवन को मरणप्राय करती हुई, मर्मान्तक पीड़ा देती है |

नाटककार का परिचय - कुसुम कुमार का जन्म 5 अगस्त 1939 को पुरानी दिल्ली में हुआ | "कुसुम कुमार का जन्म दिल्ली में एक क्षत्रीय परिवार में हुआ | पारिवारिक वातावरण सनातनी था | कुसुम कुमार की माध्यमिक शिक्षा दिल्ली में हुई | पंजाब विश्वविद्यालय से एम. ए., पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की | कुछ वर्ष दिल्ली के महिला महाविद्यालय में प्राध्यापक रूप में कार्यरत भी रहीं हैं |"3

कुसुम कुमार नाटककार के रूप में भले ही परिचित हों, उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचना कर्म किया है | जैसे " हीरामन हाई स्कूल, पूर्वी द्वार, पर्दा बाडी, मीठी नीम (उपन्यास) अभी रहेंगे, तृष्णांकित, तीन अपराध, छत्र, रास्ते भर (कविता) सुनो शेफाली, दिल्ली ऊंचा सुनती है, रावणलीला, ओम क्रांति क्रांति, पवन चतुर्वेदी की डायरी, प्रश्नकाल (नाटक) खाबगाह, मित्र मंडली, विधिवत प्रजा, चूहे, मादा मिट्टी, वह रंग शाम, कोरम, राजप्रमुख (एकांकी एवं नुक्कड़ नाटक) हिंदी नाट्य चिंतन (समीक्षा)...." उनकी रचनाओं पर टेलीफिल्में बनी, जो इस प्रकार हैं - "सुनो शेफाली (निर्देशन : विमल इस्सर), ख्वाबगाह (निर्देशन : योग टंडन) संध्याछाया(निर्देशन : नादिरा बब्बर)"5 "आप एक श्रेष्ठ चित्रकार भी हैं | आपके चित्रों की सात एकल प्रदर्शनियाँ हुई हैं |...|...|...| साहित्यिक

योगदान के लिए आपको पुरस्कार - सम्मान प्राप्त हैं; जो इस प्रकार हैं - 1982 - 82 में साहित्यिक कृति पुरस्कार दिल्ली ऊंचा सुनती है एवं रावणलीला नाटकों के लिए 1987 - 88 ईसवी में, हीरामन हाईस्कूल उपन्यास के लिए साहित्यिक कृति पुरस्कार, हिंदी अकादमी पुरस्कार, साहित्यिक योगदान सम्मान 1997 -98, कल्चरल अकादमी ऑफ राजस्थान द्वारा विशिष्ठ नाट्यकार सम्मान 2009, नटसम्राट पुरस्कार 2011"6

"कुसुम कुमार का हिंदी महिला नाटककारों में ही महत्वपूर्ण नाम नहीं है तो हिंदी के उन गिने-चुने नाटक कारों में महत्वपूर्ण हैं जिनके नाटकों का कथ्य एवं शिल्प दोनों ने निर्देशकों और नाटक के प्रेमियों को आकृष्ठ किया है | उन्होंने कुल 26 पुस्तकें लिखी हैं | कुसुम कुमार ने अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना की है | उनकी 'हिंदी नाट्य चिंतन' महत्वपूर्ण कृति है | ...| उन्होंने अनेक कविताओं एवं उपन्यासों की भी रचना की है | 'अभी रहेंगे', 'तृष्णांकित', 'रास्ते भर जंगल',' तीन अपराध' जैसी कविताएं प्रकाशित हुई हैं | उनके 'हीरामन हायस्कूल', 'पूर्वी द्वार', 'पर्दा बाड़ी' जैसे उपन्यास भी प्रकाशित है |"7

" कुसुम कुमार ने मराठी नाटकों का हिंदी में सफल अनुवाद भी प्रस्तुत किया है | वसंत कानेटकर, जयवंत दलवी, विजय तेंदुलकर जैसे प्रसिद्ध नाटककारों के नाटक उन्होंने हिंदी में अनूदित किए हैं | इतना ही नहीं तो उन्होंने अनेक एकांकी, नुक्कड़ नाटक और लघु नाटकों की भी रचना की है |

हिंदी महिला नाटककारों में कुसुम कुमार का नाटक के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान रहा है| वे केवल नाटककार ही नहीं तो उत्कृष्ठ निर्देशक, अनुवादक और नाट्य समीक्षक भी हैं | उनकी अनेक रचनाओं का मराठी, पंजाबी, डोगरी तथा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हुआ है | ..."8

<u>शीर्षक की सार्थकता</u> - दैनंदिन जीवन में, अध्ययन में हम कई मुहावरें व वाक्प्रचारों का प्रयोग करते हैं | जैसे - कान पर जूं तक न रेंगना, आना कानी करना, अनदेखी करना आदि | यह पढ़ते व सुनते हुए इनका प्रभाव इतना अनुभव नहीं होता है | जब यह प्रत्यक्ष हम पर प्रयुक्त होते हैं, तब हम सही अर्थों में इन्हें अनुभव करते हैं | इसी प्रकार प्रस्तुत नाटक का शीर्षक देखा जा सकता है | 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक में 'दिल्ली' यह व्यवस्था का प्रतीकार्थ है | 'ऊंचा सुनना' यह बहरा होना, दुर्लक्ष करना, महत्व न देना, कोई फर्क न पड़ना, इन अर्थों में है | सेवानिवृत्त कर्मचारी की पेंशन छह माह तक आवंटित ना होना यह उस कर्मचारी के लिए, उसके परिवार के लिए चिंता का, अर्थ अभाव का विषय निश्चित ही है | परंतु व्यवस्था के लिए उसकी स्थिति, परिस्थिति से कोई लेना देना नहीं हो सकता ? यह प्रश्न आज के दौर में अप्रासंगिक है | वर्तमान में यही बड़ी विडंबना है कि मानव को, उसकी समस्याओं को, उसके प्रश्नों, उसके अधिकारों को कोई विधिवत, अधिकार तथा नैसर्गिक व मानवीय धरातल पर कोई नहीं विचारता | निचली व्यवस्था से ऊपर की व्यवस्था तक सारा कार्यक्रम इसी गैर जिम्मेदारी व अनदेखी से चलता है | कोई विषय की समस्या की गंभीरता पर ध्यान नहीं देता, कोई खुली आंखों से नहीं देखता | अतः समस्या का समाधान सहज होकर भी सुलभ नहीं हो पाता | नाटक के पात्र माधो सिंह के और उनके परिवार के साथ भी यही अन्याय होता है | सेवानिवृत्ति के उपरांत उन्हें छह माह तक अपनी अधिकार की पेंशन नहीं मिलती | उसकी बहाली के लिए माधो सिंह चिट्ठियां लिखते रहते हैं | कार्यालय के चक्कर बार - बार लगाते हैं | घर में आर्थिक स्थिति विवंचना बनी है | अपनी समस्या, दवाइयों का खर्च व पेंशन का मिलना आदि समस्याओं के परिणामस्वरूप माधोसिंह की बेटी आत्मघात कर लेती है | समय के चलते माधोसिंह भी सिधार जाते हैं | पेंशन की बहाली

अब भी नहीं हुई है | इस प्रकार व्यवस्था का बिगड़ा चलन अपनी बेफिक्री, अपनी मंद गति से वह एक बहरी, न सुनने वाली अव्यवस्था बन गई है | नाटक के कथ्य हेतु यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त व सार्थक है, कथावस्तु के साथ संगति बैठाता हुआ है | अतः निश्चित ही 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' यह शीर्षक सर्वथा अपनी सार्थकता ध्वनित करता है |

कथानक 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' यह एक सामाजिक समस्याओं वाला नाटक है | यह नाटक दो अंकों में विभाजित व प्रत्येक अंक में पांच - पांच दृश्यों से हमारे सामने अपने कथ्य को कथानक द्वारा प्रस्तुत करता है | इसका कथानक पहले अंक के 52 व दूसरे अंक के 28 पृष्ठों में है |

पहले अंक में एक देहात के घर परिवार व आंगन का दृश्य है | माधोसिंह का परिवार दिल्ली से अलीगढ़ में निवास के लिए आया है | सेवानिवृत्ति के बाद दिल्ली में रहना उनके लिए कोई आवश्यक नहीं, ना ही अब दिल्ली शहर में रहने का खर्च अपनी आय में वे उठा सकेंगे | इस स्थान व परिवेश में रहना माधोसिंह की पत्नी कमला के लिए सहज स्वीकार्य नहीं है | उनकी बेटी नीति 25 वर्षीय है | उसका विवाह हुआ है, परंतु वह परित्यक्त है |

घर का मालिक मगनलाल देहाती मानवीयता वाला है, जो उन्हें अपना घर किराए पर तो देता है; परन्तु किराए की मांग नहीं करता | उल्टे उन्हें सहकार्य करता है | किराए की चिंता न करने की बात कहता है | मगनलाल समाचार पत्रों में छपे समाचारों को अपनी विशेषता मुद्रा में पढता है | पत्नी कमला को माधोसिंह नई जगह की अच्छाइयां समझाते हैं | माधोसिंह अपने परिवार से मगनलाल को परिचित करवाते हैं | वे अपनी स्थिति से मगनलाल को अवगत कराते हैं | माधोसिंह की चिंताओं मगनलाल अपना बताते हैं |

कमला पेंशन कार्यालय में सातवीं चिट्ठी लिख भेजने को माधोसिंह से कहती हैं | एक बार दिल्ली हो आने का आग्रह करती हैं | माधोसिंह स्वीकार कर फिर दिल्ली के कार्यालय निकलते हैं | मगनलाल नीति को बातों से खुश करने का प्रयत्न करते हैं |

दूसरे दृश्य में सरकारी कार्यालय का क्रियाकलाप है | माधोसिंह अपने रुके काम को जल्द करवाने की बात करते हैं | परंतु सरकारी कार्यालय का काम विचित्र नियम - ढंग से चलने का साक्षात्कार यहां होता है | कार्यालय में महिलाओं से फूहड़पण की बातें होती हैं | वहां अलका नामक महिला कर्मचारी है | वह माधोसिंह को पहचान लेती है | वह नीति की सहेली है | अतः वह माधोसिंह के अटके काम को सुलझाने में मदद करती है | रिकॉर्ड से पता चलता है कि किसी माधोसिंह कोठारी को पेंशन बाकायदा जाती रही है | और उनके रिकॉर्ड में माधोसिंह की डेथ हो चुकी है | रिकॉर्ड की गलती सुधारने के लिए माधोसिंह से अर्जी लिखवाई जाती है, जिसमें उनके जीवित होने के सारे प्रमाण दिलाने की बात स्वीकार करवा ली जाती है | अलका के कारण काम को ढंग से व गंभीरता से किया जाने लगता है | माधोसिंह का रिकॉर्ड धूल भरी फाईलों को झटककर देखना आरंभ होता है |

माधोसिंह अपने 20 साल से परिचित डॉक्टर से अपने जीवित होने का प्रमाण पत्र लेने पहुंचते हैं | परंतु किसी पेचीदगी में पडने के डर, किसी बखेड़े के डर से वे प्रमाण पत्र नहीं देते | एक चिट्ठी वे सरकारी अस्पताल के डॉक्टर के लिए देते हैं, जो उनकी मदद करेगा | माधोसिंह सरकारी अस्पताल जाते हैं | माधोसिंह जल्दी करते हैं, परंतु कर्मचारी उन्हें लाइन में सबसे पीछे खड़ा कर देता है | कितनी ही विनती के बाद वह डॉक्टर से एक मिनट मिलने की सहूलियत नहीं देता | पंद्रह दिन बाद भी डाकखाने से प्रमाणपत्र नहीं मिला है | उन्हें दिल्ली का एक और चक्कर काटना पड़ेगा | आज उनके घर का चुल्हा

नहीं जला है | "लगता है, जैसे पूरे घर की साँस बंद है |...|...| मरता और भला कैसे है आदमी ?"9

फिर से माधोसिंह सरकारी अस्पताल पहुंचते हैं| अपने लिए जीवित प्रमाणपत्र प्राप्त करने अस्पताल में केस पेपर को ऊपर - नीचे करने की कला का भंडाफोड़ एक युवक करता है | परंतु वही गड़बड़ी आगे व्यवस्था में प्रत्यक्ष दिखाई देती है| जिस व्यक्ति का परचा नीचे रख दिया गया था, उसी को डॉक्टर बुलाते हैं| लेडी डॉक्टर एक रुग्ण की जांच कर फोन पर बातें करती रहती हैं| माधोसिंह लाइन के अंत में हैं | उन तक आते-आते लंच टाइम होता है| उन्हें कल फिर आने को कहा जाता है | बदली होने से अस्पताल में दो हफ्ते से डॉक्टर नहीं आए हैं| माधोसिंह फिर भी लाइन में लगे हैं | लोग रोज लाइन लगाकर दिन भर रुकते हैं, लौट जाते हैं | अभी नए डॉक्टर की नियुक्ति नहीं हुई है | माधोसिंह का काम बनने - बनाने की आश्वासकता अस्पताल का कर्मचारी दिखाता है | तब व्यवस्था का सत्य माधोसिंह बताते हैं कि क्षमतावान अक्षम हैं |

अंततः माधोसिंह का प्रमाणपत्र मिल जाता है| परंतु माधोसिंह के स्पेलिंग गलत रूप में माधोसिंह लिख कर आता है | अत: माधोसिंह उदास, निराश होते हैं | मगनलाल उस गलती को सुधारने के लिए खुद दिल्ली जाने को तैयार हैं| नई अर्जी व प्राप्त प्रमाणपत्र मगनलाल माधोसिंह से ले लेते हैं |

देश को समाजवादी, धर्म-निरपेक्ष, वर्गहीन बनाए जाने की नेताओं की बातें व वास्तव पर माधोसिंह व मगनलाल के बीच चर्चा होती है | लालफीता शाही को महादेव भी न बदल पाने की बात माधोसिंह करते हैं| सब तरफ बनी दलदल में आम आदमी का सांस लेना भी मुश्किल है |

डाक से माधोसिंह का प्रमाणपत्र आता है| वे चिट्ठी वह लिख कर अपने सारे पैसे बटोरने का आनंद व्यक्त करते हैं| अब वे मथुरा, वृंदावन, आगरा जाएंगे |

माधोसिंह पे एंड अकाउंट्स ऑफिस जाते हैं| वहां उनकी फाइल पर इंक्वायरी होगी| ऑफिस का वातावरण अंग्रेजी भाषा से दम घुटाऊं बन पड़ता है| माधोसिंह को अंदाजा नहीं था कि यहां भी किसी कारण पैसे रुक सकते हैं | जवाब में उन्हें अधिकारी असली इंक्वायरी करने की, पैसों का मामला होने की व सभी तरह के क्लिअरन्स यहीं पर जरूरी होने की तथा उनके केस पर हमदर्दी से विचार करने की, अपना फैसला जल्दी बताने की बात करते हैं | सारी बातों की, संवादों की कड़ी माधोसिंह के मस्तिष्क में लिए घर पहुंचते हैं | माधोसिंह को अंदेशा है कि उनका काम कभी नहीं होगा| यहां माधोसिंह गले में फांसी का फंदा डाल लेने की भावना व्यक्त करते हैं| व्यवस्था में बैठे बदमाशों को सबक सिखाने, पिता को दिए किसी पर हाथ न उठाने के प्रण तोड़ने का निर्णय मगनलाल कर लेते हैं| वह गृहमंत्री से काम सुलझाने, बनाने का विचार रखते हैं| माधोसिंह को लेकर मगनलाल अब गृह मंत्री के समक्ष है | गृहमंत्री कुलजीवन लाल अपनी व्यस्तता गिनाते हैं| अंततः फाइनेंस सेक्रेटरी से फोन पर बात करते हैं| कुछ दिन बाद माधोसिंह व मगनलाल घर लौटने पर उन्हें कमला रोती हुई बताती है कि आपके जाते ही नीति ने उसी रात कुछ खा लिया| माधोसिंह को इस समाचार से बड़ा आघात होता है| उन्हें मगनलाल समझाते हैं |

माधोसिंह व कमला को सहज बनाने का प्रयास मगनलाल करते रहते हैं| माधोसिंह के लिए पत्र आता है| "...? अभी तो एक और इंक्वायरी होनी है| अर्थ सचिव ने मामला निपटाने के लिए एक इन्वेस्टीगेशन ऑफिसर मुकर्रर कर दिया है|"10 साथ इसी प्रसंग में माधोसिंह की मृत्यु हो जाती है | अब पे एंड अकाउंट्स ऑफिस से माधोसिंह की रजिस्ट्री आती है| कमला आगे बढ़ती है | डाकिया माधोसिंह को बुलाने के लिए कहता है | धीमे व मृत स्वर में कमला बताती है, वे चार महीने पहले गुजर गए| कमला धीरे - धीरे भीतर लौटती है| यहां पर इस नाटक का कथानक समाप्त होता है |

'दिल्ली ऊंचा सुनाती है' नाटक में अभिव्यक्त समस्याएं : आरंभ में जैसे कहा गया है कि यह एक सामाजिक समस्या नाटक है | इसके कथ्य को व्यक्त करने में पारिवारिक, आर्थिक व कई सारी सामाजिक समस्याओं का आधार है |

अ) *परित्यक्ता समस्या* - हमारे समाज में परित्यक्ता यह एक गंभीर समस्या है | नाटक की पात्र नीति 25 वर्षीय विवाहित युवती है | पता नहीं उसके पति ने उसे किस कारण छोड़ा है | अतः युवती अपने मां - पिता के घर रहती है | नीति की बीमारी मानसिक है | पिता की आय अधिकतर उसके इलाज पर खर्च होती है | साल भर पिता की पेंशन नहीं मिलती | अतः पिता व परिवार पर बोझ बनने की स्थिति में वह आत्मघात कर लेती है |

आ) जनसाधारण की विवशता और गरीबी - सेवानिवृत्ति पश्चात् दिल्ली में रह पाना माधोसिंह को संभव नहीं है | अतः पत्नी की इच्छा के विरुद्ध वे एक कस्बे में रहने आते हैं | यहां आदत से अब सब ठीक होगा, यह विश्वास पत्नी को दिलाते हैं | "भीतर की खुशी का वास्ता न शहर से होता है गांव से कमला ! उसका वास्ता अपने हालात से होता है - हालात से !"11

वे दिल्ली से कस्बे आने में राहत अनुभव करते हैं | रोज घर से दफ्तर आना-जाना 20 मील की दूरी 36 साल तक तय करना, सुई की नोक से बिंधी जिंदगी उन्हें किसी काम की नहीं लगती | खुला आकाश, कच्चा फर्श, परिंदों की आवाज का आनंद अनुभव करते हुए वे स्थितियों से समझौता करते हैं |

स्थिति को स्वीकार कर कस्बे में नाखुशी से कमला रहती है | छह माह बाद पेंशन न मिलने से वे परेशान हैं | अतः वे पति से एक बार दिल्ली हो आने का आग्रह करती हैं | दिल्ली हो आने का अतिरिक्त खर्च सहने की बात वे रुकी पेंशन के बदले करती हैं |

साल भर कोशिशों के बाद भी पेंशन ना मिलने के दुख से बड़ा, दुख बिटिया के चले जाने से माधोसिह अनुभव करते हैं | नीति की मृत्यु पर मगनलाल कहते हैं, "... मौत से बढ़कर तो अकेली गरीबी बहुत है | ... अब बताइए, माधो भाई, मौत से बढ़कर बुरा और क्या होता है |"12 देर - अंधेर की भावना पर नाटककारने नीति के संवाद के माध्यम से कहा है, "... जो लोग देर सहते हैं वही अंधेर भी सहते हैं |... |"12

इ) व्यवस्था की अव्यवस्था - अपने अधिकार की पेंशन की समस्या, सात चिट्टियां लिखाने को विवश करती है | यह व्यवस्था अंग्रेजीयत वाली है; अतः अंग्रेजी भाषा करते मूडी अधिकारी, कर्मचारी जनसाधारण की सुनते - समझते नहीं | स्थिति यह की मूडी अधिकारी अपने कार्यालय में आए ना आए कौन पूछे ? सक्सेना नामक कर्मचारी कब आएगा कोई नहीं जानता | चिट्टियां के उत्तर एक दिन में न दे पाने का समर्थन व्यवस्था में इस प्रकार है, "सरकारी दफ्तर है यह बाबा, किसी महबूब का दिल नहीं जो सवाल भी उसी पल हो और जवाब भी उसी पल !"13

कार्यालय से हुई गलती की जिम्मेदारी कोई नहीं मानता | उसका सुधार जनसाधारण को ही करना पड़ता है, रिकॉर्ड में माधोसिंह की हुई मौत को जीवंत करें | स्थिति यह है कि केवल चिट्ठियां लिख कर, दिल्ली के चक्कर लगाकर सुनवाई की आस नहीं बंधेगी | क्योंकि व्यवस्था भ्रष्ट है | व्यवस्था का वास्तव माधोसिंह ने अनुभव कर लिया है | "एक बार मर कर फिर से जिंदा हो ना इतना आसान नहीं होता ... और फिर इस जमाने में सिर्फ सांस लेने का मतलब जिंदा रहना थोड़े ही है | पैसा चाहिए, पैसा ! पैसा आदमी को मारता है ! पैसा जिलाता है |"14

भगवान का फैसला भी यह व्यवस्था लाल फीते से न बांधकर रखे ऐसी स्थिति देश की है | व्यवस्था की कीचड वाली दलदल सूखने से रही | "अभी तो यहां सब एक - एक धिनौनी मिसाल कायम कर रहे हैं |"15

पेंशन बहाली में गलती हो सकती है परंतु वह सुधारणा जनसाधारण के लिए इतनी कठिन हो सकती है कि "लेकिन यह गलती तो यमराज के खाते में हुई गलती से भी दुखदाई है |"16 अंग्रेजी बोलने वाला कोई सक्षम अधिकारी ही जीवंत को जीवंत कह सकता है और ऐसे लोग अपनी अक्षमता दिखाते, जताते हैं | ऐसी गंदी व्यवस्था अपनी अक्षमता को समझने की कोशिश करने की बात लगातार करती है | बारह महिने के अनुभव को समझते हुए माधोसिंह क्रुद्ध शब्दों में अभिव्यक्ति देते हैं | "अंडरस्टूड ! आय हैव अंडरस्टूड एवरी सिचुएशन ! अंडरस्टूड दिस ब्लडी सिस्टम अंडरस्टूड ! नथिंग कैन बी डन विद दीज सिचुएशन... विद दिस सिस्टम ! ... |"17

ई) भ्रष्टाचार - देश में मंत्री से अधिकारी तक व्यवस्था की भ्रष्टता का सुधार महादेव भी न कर पाए | लेखा विभाग सभी का लेखा - जोखा रखने का दम भरता है, परंतु वही एक की पेंशन दूसरे को भेजता है और पेंशन के हकदार को मृत घोषित करता है | हकदार को उठाईगीर समझता है | छान - बीन कर फैसला बताना अपनी मर्जी समझते हैं | "है उन्हीं के बाप का राज है |" 18 भ्रष्टाचार में क्या अधिकारी, क्या मंत्री | अपनी मालिश तीन घंटे करवाने वाले देश के गृहमंत्री अपनी व्यस्तता देश जितनी बड़ी दिखाते हैं | साधारण मनुष्य का जीवन बड़ा मुश्किल होता है | नेता तो बड़े लोग होते हैं |

उ) रेकोर्ड की अविश्वसनीयता - प्रमाणपत्र से गलती में सुधार पर साधारण जन भगवान् का आभार करता है | यहाँ नाटककार जनसाधारण की विषन्न मानसिकता से उबरने का क्षणिक आनंद दर्शाते हैं | परन्तु यह आनंद उन्हें ईश्वरीय होने का अनुभव अर्थात् अविश्वसनीय है | रेकोर्ड में हुई मृत्यु मनो सचमुच थी | अब रेकोर्ड में सुधर होने पर वह जैसे जी उठने का अनुभव कर्ता है, "कमला ! तुम्हारा पति फिर से जी उठा - आओ, आकर देखो |"19 यहाँ माधोसिंह के आनंद का कोई ठिकाना नहीं रहता | परन्तु यह आनंद, हर्ष अधिक्ल समय तक नहीं रहता | पेंशन की साधारण- सी दुरुस्ती के लिए देश के गृहमंत्री तक असहायता दिखाते हैं; यह कहकर कि पार्लियामेंट में हमारी पार्टी को मेजॉरिटी होती तो स्याह करें, सफेद करें सब चलता था, आज वह बात नहीं रही | सच्चे प्रकरणों में कोई लेना - देना नहीं होता, इसलिए सच्चे प्रकरणों में कोई कुछ नहीं करता | सभी की बातों में अपनापन दिखता है; "हम यह काम जरूर कर देते लेकिन तब जबकि तुम्हारा केस फ्रॉड होता |" 20 भ्रष्ट अधिकारियों के चरित्र भी भ्रष्ट हुए हैं | वे अपने अधीनस्थ काम करने वाली महिला, लड़कियों पर अपना संपूर्ण अधिकार मानकर चलते हैं | अतः उनसे फूहड़ता भरी बातें करते हैं | कामकाज करते समय उनके शरीर को स्पर्श करना, कंधे पर हाथ रख; कंधा दबाकर अपना अधिकार दिखाते हैं |

प्रस्तुतिकरण तथा मंचियता - इस नाटक का प्रथम मंचन 22 सितम्बर 1981 से कई निर्देशक व् नाट्यमंडली द्वारा विभिन्न स्थानों पर बीस बार प्रस्तुतिकरण हुआ है | जिससे स्पष्ट है कि मंचियता की दृष्टि से यह नाटक एक सफल नाटक सिद्ध हुआ है | "प्रस्तुत नाटक मध्यवर्ग के अर्थाभाव, देश में व्याप्त नोकरशाही, लालफीताशाही की बढ़ती रिश्वतखोरी, अधिकारियों की, मंत्रियों की उदासिनता, बढ़ता अमानवीय व्यवहार, व्यवस्था में सामान्यं मनुष्य की होने वाली उपेक्षा आदि का वास्तविक चित्रण करता है | साथ ही नाटक प्रशासनिक अकर्मण्यता के विषय को उठाते हुए सरकारी कार्यालयों में बढ़ती जाने वाली लापरवाही, कर्मचारियों की मनमानी करने की प्रवृत्ति, उत्तरदायित्व हीनता और आम आदमी को मिलने वाली पीड़ा को भी चित्रित कर्ता है |" 21

अत: यह नाटक अपनी समकालीन व् सद्यकालीन व्यवस्थाओं की पोल खोल करता हुआ सांगत व् युगजयी नाटक है | इसमें जो समस्याएं दर्शायी गयी थी वे वर्तमान में और भी भयावह रूप में अनुभूत हो रही हैं | इन समस्याओं के समाधान आज तक हमारा समाज, व्यवस्थाएं दे नहीं पायी; सत्य की यह एक विडम्बना ही है |

सन्दर्भ ---

1 हिंदी महिला नाटककार - डॉ. भगवान जाधव - पृष्ठ 173
2 दिल्ली ऊंचा सुनती है - कुसुम कुमार पृष्ठ - 14
3 हिंदी महिला नाटककार - डॉ. भगवान जाधव पृष्ठ - 64
4 दिल्ली ऊंचा सुनती है - मलपृष्ठ से
5 हिंदी महिला नाटककार- डॉ. भगवान जाधव पृष्ठ - 64
6 वही - पृष्ठ 64
7 हिंदी महिला नाटककार - डॉ. भगवान जाधव पृष्ठ - 64
8 वही - पृष्ठ 65
9 दिल्ली ऊंचा सुनती है पृष्ठ - 54
10 वही पृष्ठ - 17
10 वही पृष्ठ - ९३
11 वही पृष्ठ - ९०
12 वही - पृष्ठ 84
13 वही - पृष्ठ 40 3
14 वही - पृष्ठ 53
15 वही - पृष्ठ 72
16 वही - पृष्ठ 62
17 वही - पृष्ठ 63
18 वही - पृष्ठ 79
19 वही - पृष्ठ 73
20 वही - पृष्ठ 85
21 हिंदी महिला नाटककार - डॉ. भगवान जाधव - पृष्ठ 175

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com